भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए १९-२५ सितम्बर, २०१६ साप्ताहिक सलाह

" सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

सितम्बर													
	वास्तविक वर्षा (मिमी)								मौसम विभाग व्दारा संभावित वर्षा (मिमी)				सलाह
दिनांक	8 to14	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	
पंजाब														पंजाब में फसल परिपक्वावस्था में पहुँच गई है| खरपतवार नियंत्रण, सिंचाई तथा पोटेशियम नाइट्रेट का छिड़काव किया जा सकता है| नाशीकीट संख्या गतिकी एक बार फिर शुष्क मौसम के कारण बदल रही है| इसके परिणामस्वरूप सफ़ेद मक्खी की संख्या में वृद्धि हुई है| पंजाब में फरीदकोट जिले के चार गावों में किए गए सर्वेक्षण में रामियाना, मराक तथा अजीतगिल गांवों के 1 से 3 स्थानों में सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर को पार कर चुकी है| मुक्तसर के 25 गांवों में सर्वेक्षण किया गया| इनमें से 5 गांवों, नामतः, गोंनियाना, लखेवाली, भागसर महाबदर तथा बुर्रा गुज्जर के 1-2 स्थानों में बीटी संकरों पर सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई| भटिंडा जिले के अंतर्गत 23 गांवों में किए गए सर्वेक्षण में इन सभी गांवों में 1-6 स्थानों में सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर को पार कर चुकी है| कपास पर्णकुंचन रोग ग्रेड-II से ग्रेड-III के मध्य रहा| कपास पर जीवाणु शीर्णता रोग भी देखा गया है| भारी वर्षा अथवा सिंचाई देने के बाद कपास पर यदि आकस्मिक मुरझान रोग के लक्षण दिखाई देते हैं
भटिंडा	0	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
फिरोजपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मुकतसर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
मानसा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	

														तो पंजाब कृषि विश्वविद्यालय की सिफ़ारिशों के अनुसार लक्षण दिखाई देने के कुछ घंटों के अंदर ही प्रभावित पौधों पर कोबाल्ट क्लोराइड 10 पीपीएम (10 मिग्रा/ली पानी) की दर से प्रयोग कर इसका प्रबंधन करें| पत्ती धब्बा अथवा पत्ती गलन की रोकथाम के लिए फसल पर सिफ़ारिश किए गए फफूंदनाशकों का 15 से 20 दिनों के अंतराल पर हल्की वर्षा होने के बाद फसल पर छिड़काव करें|
हरियाणा														हरियाणा में सर्वेक्षण में सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम दर्ज की गई जबकि सिरसा में इसके अर्भकों की संख्या बढ़त की ओर है| हिसार जिले के 03 गांवों, सदलपुर, भत्तू तथा नेहराना, के एक-एक स्थलों में सफ़ेद मक्खी की संख्या वृद्धि आर्थिक हानि स्तर को पार कर चुकी है|
सिरसा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
हिसार	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
राजस्थान														राजस्थान के श्रीगंगानगर के 03 गावों में किए गए सर्वेक्षण में सिर्फ खलिया गाँव के दो स्थलों पर सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक रिकार्ड की गई|
हनुमानगढ़	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	0.2	0	0	0	7	1	6	16	1	1	1	0	0	
उड़ीसा														ओड़ीशा में फसल पुष्पन से गूलर विकास अवस्था के मध्य है| रस चूषक कीटों का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से कम दर्ज किया गया है|
कोरापुट	57	4	6	2	5	12	9	16	29	32	39	24	24	
कालाहांडी	104	7	9	3	0	0	0	3	16	6	16	20	30	
बोलांगीर	63	3	1	3	0	0	13	4	10	0	17	8	17	
गुजरात														गुजरात में फसल पुष्पन अवस्था में है| चासवड गाँव के एक स्थान पर जैसिड का ग्रसन आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाया गया| अजीत-199बीजी II पर देदियापाडा गाँव में फूलकीट(थ्रिप्स) तथा गूलर की गुलाबी सूँडी की संख्या क्रमश: 02 तथा 01 स्थानों पर आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई| जूनागढ़ के सर्वेक्षण किए गए 08 गांवों में से
अमरेली	10	3	3	40	4	46	71	19	10	10	15	15	5	
भावनगर	6.6	0	1	21	8	30	65	21	10	10	15	5	5	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	9	3	10	7	15	5	0	

राजकोट	0	0	0	1	0	10	59	4	10	15	15	15	5	06 गांवों, नामत:, धोराजी, छोड़ावडी, मेडापारा, खोकराडा, नागदिया तथा थानापिपली में थ्रिप्स का प्रकोप 1-2 स्थानों में देखा गया है| छोडावाडी गाँव में गोपाल-155बीजी-II, आरसीएच बीजी-II पर तथा मेडापारा गाँव में गजब बीजी-II पर 1-2 स्थलों पर गुलाबी सूँडी का ग्रसन आर्थिक हानि से अधिक पाया गया| गुलाबी सूँडी की निगरानी के लिए कपास की फसल में 05 ट्रैप प्रति हे. की दर से स्थापित करें| ट्रैप में पतंग की पकड़ 5-6 पतंग/ट्रैप/रात्रि तक आने के बाद इन पतंगों का बड़े पैमाने पर पकड़ने के लिए 20 ट्रैप/हे. की दर से स्थापित करें| जैसिड तथा थ्रिप्स आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाए गए| जूनागढ़ में फसल कलिकायन तथा गूलर विकास अवस्था में है| सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम (0 से 2/3 पत्तियाँ/पौधा) रिकार्ड की गई| जैसिड की संख्या (7-8/3 पत्तियाँ/पौधा) तथा थ्रिप्स की संख्या (6-8/3 पत्तियाँ/पौधा) आर्थिक हानि स्तर से अधिक जबकि चेंपा(एफीड) की संख्या (0-01/3 पत्तियाँ/पौधा) तथा मिलीबग की हानि (0-01 ग्रेड/पौधा) आर्थिक हानि स्तर से कम दर्ज किए गए| गूलर की गुलाबी सूँडी का प्रकोप अगेती बोई गई फसल में एक सूँडी प्रति 20 पुष्प पर नोट किया गया| जीवाणु पत्ती गलन तथा *एल्टरनेरिया* पत्ती धब्बा रोग रिकार्ड किए गए जिनके लिए रोकथाम के उचित उपाय किए गए|
भरूच	9.7	0	2	19	10	27	15	3	0	25	13	12	0	
सबरकांठा	0	0	2	0	1	0	6	0	0	6	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	1	3	0	0	7	0	0	0	5	3	0	
अहमदाबाद	0	0	0	2	0	2	19	0	5	0	5	0	0	
वडोदरा	0	0	1	9	7	12	28	13	5	5	10	5	5	
पाटन	0	0	0	0	0	0	0	0	0	5	0	0	0	
मेहसाना	0	0	2	1	0	0	1	0	0	5	0	0	0	
मध्य प्रदेश														रोगों का प्रकोप नहीं देखा गया| रस चूषक कीटों की रोकथाम सिफारिश किए गए उपायों से की गई|
खरगोन	0	0	13	10	23	17	39	7	27	22	35	30	42	
धार	0	0	2	16	24	0	27	12	25	20	34	30	42	
खंडवा	0	0	6	4	61	0	8	0	27	22	35	30	42	
महाराष्ट्र														फसल गूलर निर्माण अवस्था में है| खरपतवार कम पाया गया| मानसून-पूर्व बोई गई फसल में फूलकीट (थ्रिप्स) तथा जैसिड का प्रकोप देखा गया है जबकि सामान्य समय पर बोई गई फसल में सफ़ेद मक्खी का ग्रसन
धुले	5	5	6	23	16	21	8	0	2	9	4	15	4	
नांदूरबार	15	0	9	26	22	27	17	2	0	5	3	8	1	

जलगांव	1.9	1	8	29	32	23	3	1	5	15	8	25		देखा गया| जीवाणु पत्ती शीर्णता(गलन) तथा *एल्टरनेरिया* पत्ती धब्बा कुछ खेतों में देखे गए| वर्षा होने वाले क्षेत्रों में कलियों का झड़ना देखा जा रहा है| बारानी परिस्थिति में नमी संरक्षण के लिए फसल में नाली बनाने का कार्य करें| कली तथा छोटे गूलरों के झड़ने की रोकथाम के लिए फसल पर नेफ़्थेलीन एसीटिक एसिड(एनएए) का छिड़काव @1.2 मिली प्रति 10 ली पानी की दर से करे| सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक होने पर सिफारिश किए गए उपाय करें| राहुरी जिले के तीन गांवों (साडे, गोबुम्बे आखाडा तथा पिंपरी) में किए गए सर्वेक्षण में सभी गावों के 2-3 स्थलों पर जैसिड तथा फूलकीट की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई| नांदेड के पाँच गावों (देलप, गौल, जवाला, पाला तथा धनेगाव) में सर्वेक्षण किया गया| इनमें सफ़ेद मक्खी तथा फूलकीट सभी स्थलों पर; जैसिड 2-3 स्थलों पर तथा गुलाबी सूँडी 4-5 स्थलों पर तथा धब्बेदार सूँडी देलप गाँव के सभी पाँच स्थलों पर आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाई गई| अकोला जिले के सर्वेक्षण किए गए तीन गांवों, निम्बकर्डा, उगवा तथा आगर में बीटी संकरों पर जैसिड तथा फूलकीट क्रमश: 3-4 तथा 2-3 स्थलों पर आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाए गए| गूलर की गुलाबी सूँडी की निगरानी के लिए 05 ट्रैप प्रति हे. की दर से फीरोमोन ट्रैप स्थापित करें|
अहमदनगर	4.6	2	34	34	53	9	0	0	45	30	22	32		
औरंगाबाद	4.2	0	5	30	22	11	2	3	9	35	7	35		
जालना	12	10	14	25	24	10	1	1	6	35	6	15		
बीड़	14	13	32	37	45	2	0	1	7	20	5	7		
नांदेड़	39	29	30	26	24	2	2	0	65	35	10	13		
परभणी	30	28	22	53	50	1	1	0	12	36	12	21		
हिंगोली	21	20	27	31	16	3	4	0	40	48	25	29		
बुलढाना	1.2	1	3	15	17	9	1	0	10	30	10	15		
अकोला	5.1	4	14	10	19	14	0	3	18	18	20	14		
वासिम	11	11	10	31	2	4	0	0	15	20	15	20		
अमरावती	15	14	15	6	17	10	9	5	35	35	10	15		
यवतमाल	43	24	10	17	5	1	1	1	30	20	20	14		
वर्धा	40	31	3	1	18	10	4	2	25	20	15	10		
नागपुर	50	18	2	0	2	2	2	1	20	30	12	12		
चन्द्रपुर	161	8	7	9	2	1	0	0	30	10	14	10		
तेलंगाना														विगत सप्ताह मौसम में बहुत नमी बनी रहने से यह रस चूषक कीटों विशेष रूप से थ्रिप्स तथा एफीड(चेंपा) के प्रकोप के बढ़ने का कारण बना| सिफ़ारिश किए गए उपायों द्वारा इन नाशीकीटों की रोकथाम की गई|
आदिलाबाद	55	16	13	12	9	0	8	1	26	15	0	15		
वारंगल	49	15	13	22	7	1	6	0	15	1.4	0	0		
खम्मन	48	15	10	4	1	1	1	1	10	0	1.1	4		

कारिंगर	82	7	11	16	15	3	8	1	48	4.1	0	7		
नालगोंडा	108	19	15	10	0	0	0	1	10	0	0	5		
महबूबनगर	59	22	19	33	1	3	1	5	2	1	1.5	3		
आंध्रप्रदेश														
गुन्टूर	99	3	10	4	1	10	0	0	5	0	2.1	14	20	
प्रकासम	91	7	7	1	0	4	0	0	14	0	6.1	2	9	

उर्वरकों की पहली विखण्डित मात्रा दी गई तथा अंत:सस्य क्रियाएँ की गई| खरपतवारों की रोकथाम, वर्षाजल संरक्षण तथा अतिरिक्त वर्षाजल निकासी का कार्य पूरा किया गया| अधिकांश कपास उत्पादक क्षेत्रों में फसल कलिकायन से लेकर गूलर विकास अवस्था के मध्य (35-80 दिन) है| अधिकांश जिलों में गुलाबी सूँडी का प्रकोप गुलाबवत् फूलों में पाया गया| यद्यपि यह प्रकोप अनन्तपुर तथा कडप्पा जिलों में आर्थिक हानि स्तर के निकट था| गुलाबी सूँडी की निगरानी करने के लिए सामुदायिक स्तर पर 4-5 ट्रैप/हे की दर से फीरोमोन ट्रैप स्थापित करें| गुलाबवत् फूलों का निरीक्षण तथा हरे गूलरों के नमूने नियमित रूप से एकत्र करें| गुलाबी सूँडी की संख्या को प्रारंभिक अवस्था में कम रखने के लिए गुलाबवत् फूलों को नष्ट करें तथा झड़ी हुई कलियों, सूखे फूलों तथा परिपक्वावस्था-पूर्व के गूलरों को एकत्र कर नष्ट करते रहें| अंड निक्षेपण रोकने के लिए फसल की पुष्पन अवस्था में निरोधक छिड़काव के रूप में 5% निंबोली गिरि अर्क अथवा नीमतेल का अनुप्रयोग करें| आर्थिक हानि सीमा (8 पतंग/ट्रैप/रात्रि अथवा 01 गुलाबी सूँडी प्रति 10 फूल अथवा 10 हरे गूलर) पर आवश्यकतानुसार कीटनाशकों का अनुप्रयोग करें| जलवायु में उतार-चढ़ाव अथवा दूसरी अनिश्चित मौसमी परिस्थितियों के कारण कपास के विभिन्न बीटी संकरों में तीव्रता के विविध परिमाण के साथ दैहिकीय लाल पत्ती रोग देखा गया| एक वर्धक मात्रा के रूप में 25-35 किग्रा. यूरिया तथा 10-15 किग्रा.म्यूरेट ऑफ पोटाश उर्वरकों का प्रति एकड़ मृदा अनुप्रयोग किया जा सकता है| यूरिया 1-2%+1.0% मेग्नीशियम सल्फेट अथवा 1-2% पोटेशियम नाइट्रेट (मल्टी पोटाश)+ 1% मेग्नीशियम सल्फेट अथवा 1-2% डीएपी+ 1%मेग्नीशियम सल्फेट

														@5-7 दिनों के अंतराल पर पौधों की पतिप्राप्ति होने तक फसल की आयु के अनुसार फसल पर छिड़काव करें| रस चूषक कीटों के लिए सर्वेक्षण चार गावों, नामत:, पोन्नेकल्लू, पेड़ा परिमि, लेमाल्ले तथा लिंगापुरम में प्रत्येक के एक स्थान पर केवल थ्रिप्स की संख्या बीटी संकरों में आर्थिक हानि स्तर से अधिक रिकार्ड की गई|
कर्नाटक														विगत सप्ताह धारवाड़ तथा हवेरी जिलों के कपास उत्पादक क्षेत्रों में वर्षा नहीं होने से मौसम शुष्क रहा| रस चूषक कीटों तथा गुलाबी सूँडी/मिरिड बग प्रकोप की रोकथाम के लिए फसल सुरक्षा उपाय किए गए| प्लानोफिक्स तथा पानी में घुलनशील 19:19:19 उर्वरक का फसल पर छिड़काव किया गया| हवेरी तथा बेलगाम जिलों में बीटी कपास की अगेती बोई गई फसल पर गुलाबी सूँडी का प्रकोप देखा गया| बीटी कपास के खेतों में गुलाबी सूँडी के पतंग को बड़े पैमाने पर पकड़ने के लिए उपयुक्त फीरोमोन ट्रैप की स्थापना करें| धारवाड़ तथा बेलगाम जिलों के कपास उत्पादक गांवों में *एल्टनेरिया* पत्ती धब्बा का प्रकोप नोट किया गया है| हवेरी, धारवाड़ तथा बेलगाम जिलों के भागों में बीटी कपास में गुलाबी सूँडी के प्रबंधन के लिए विशेष निगरानी तथा सावधानी के उपाय करने का सुझाव दिया जाता है| नाशीकीटों तथा रोगों के प्रबंधन के लिए तात्कालिक कार्यवाही के लिए कपास वैज्ञानिकों के दल का नियमित दौरों का प्रबंध सर्वेक्षण तथा समय पर और खेत पर ही सुझाव देने के लिए किया गया है| सर्वेक्षन किए गए 12 गांवों में से गुडागेरी तथा कडकोल गावों में प्रत्येक के एक स्थान पर जैसिड, थ्रिप्स तथा गुलाबी सूँडी आर्थिक हानि स्तर से अधिक रिकार्ड किए गए| रायचूर में तीन गावों, सोमासमुद्र, कोल्लूर तथा कोलागल, में सर्वेक्षण किया गया| इन गांवों के 5-6 स्थलों पर थ्रिप्स, 5 से 8 स्थलों पर गुलाबी सूँडी आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई| गुलाबी सूँडी तथा *एल्टनेरिया* पत्ती धब्बा की रोकथाम के लिए आर्थिक हानि स्तर पर आधारित सिफारिश किए गए उपचारात्मक उपाय प्रारम्भ किए जा सकते हैं|
धारवाड़	0.5	0	6	6	2	2	2	0	2	1	23	30	4	
हवेरी	1.5	0	13	2	0	6	2	0	2	2	23	29	7	
मैसूर	5.3	1	7	1	0	0	0	0	1	2	8	6	7	

तामिलनाडु													
पेरंबलुर	6	0	0	0	0	0	0	0	3	3	0	0	0
सलेम	5.6	4	0	0	0	0	0	0	3	3	3	0	0
त्रिची	2.2	0	0	0	0	0	0	1	3	3	0	0	0
विरडुनगर	10	0	0	0	0	0	0	0	4	0	0	0	0

विगत सप्ताह अधिकांश कपास उत्पादक क्षेत्रों में सूखा काल बना रहा| खरपतवार नियंत्रण के कार्य प्रारंभ किए जा सकते हैं| चेंपा(एफिड) की सतत विद्यमानता देखी जा रही है| ग्रीवा विगलन पाए जाने पर कॉपर आक्सी-क्लोराइड (1.0 ग्रा/ली की दर से) के पानी के घोल से प्रभावित पौधों की जड़ों को तर करें| सर्वे किए गए 03 गांवों के सभी स्थलों में गुलाबी सूँडी का प्रकोप (गूलरों में 14 से 42% के मध्य) आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज किया गया| गुलाबी सूँडी की निगरानी के लिए 5 ट्रैप/हे की दर से फसल में स्थापित करें| ट्रैप में पतंगों की पकड़ 5-6 पतंग/ट्रैप/रात्री तक पहुँचने पर बड़े पैमाने पर पतंगों को पकड़ने के लिए और अधिक फीरोमोन ट्रैप @20 ट्रैप/एकड़ की दर से फसल में स्थापित करें|

आदर्श वर्षा					
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	21-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

डा. के.आर. क्रांति, डा. ए. एच. प्रकाश, डा. संध्या क्रांति, डा. डी. मोंगा, डा. ब्लेज़ डी-सूजा, डा. एस. बी. सिंह, डा. सिंगनधूपे, डा.एम.वी. वेणुगोपालन, डा. इसाबेला अग्रवाल, डा. एम.सबेस, डा. विश्लेष नगरारे, डा. ऋषि कुमार, डा. एन अनुराधा नराला, डा. दीपक नगराले, श्रीमति संगीता औरंगाबादकर एवं कु. सचिता एलेकर

हिन्दी संसकरण: डॉ. उल्हास नंदनकर**,** मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं प्रभारी, हिन्दी अनुभाग तथा प्रभारी, वरिष्ठ प्रक्षेत्र अधीक्षक**,** केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)